SON 6

लेखक

चित्रकार

पंकज डेविडसन

बबलू सुनील देवड़ा रूप

पर्गट सिंह

सिंह गुर्जर

पिंटू

٠.

निर्माता

सिद्धार्थ मासकेरी

मार्गदर्शक

स्मृति राज

स्टोरी बस

प्रकाशक सॉलिफाय

विशेष धन्यवाद मनीष जैन और

जेल यूनिवर्सिटी (एक पहल शिक्षांतर आंदोनल का)

Copyshare 2019

प्राक्कथन

यह छोटी सी सुंदर सी कहानी आमंत्रण है हर छपे हुए सपने,

ताकत, ख़ुशी को व्यक्त करने के लिए। जब सीखना व बाटना

शुरू हो जाता तो कई नये चमत्कार हो सकते हैं। उदयपुर जेल

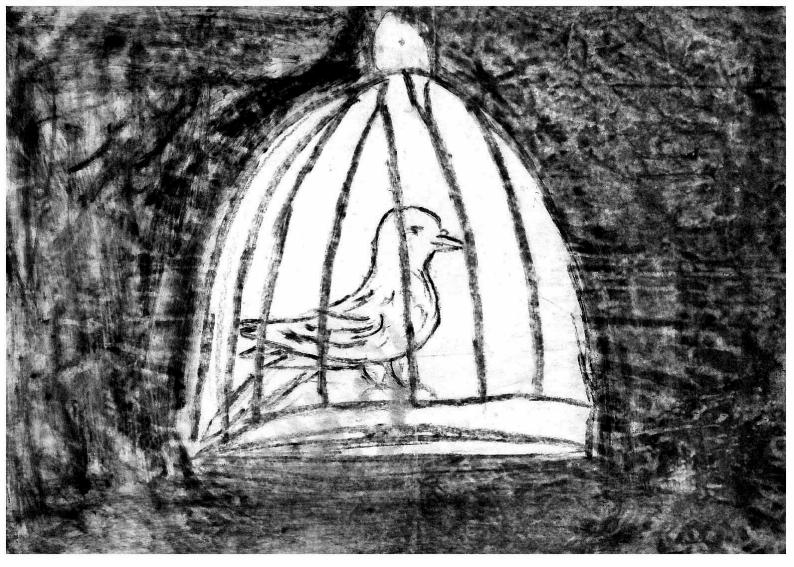
यूनिवर्सिटी से निकली ये कहानी कई नयी कहानियों को जन्म देने

वाली हैं। हम सिद्धार्थ मासकेरी की इस पहल के लिए बहुत आभारी हैं।

- मनीष जैन और विधी जैन

कबूतर पिंजरे में कैद है और आंसुओं से रो रहा है।

गुजरे हुए खुशी के वक्त को याद कर रहा है।

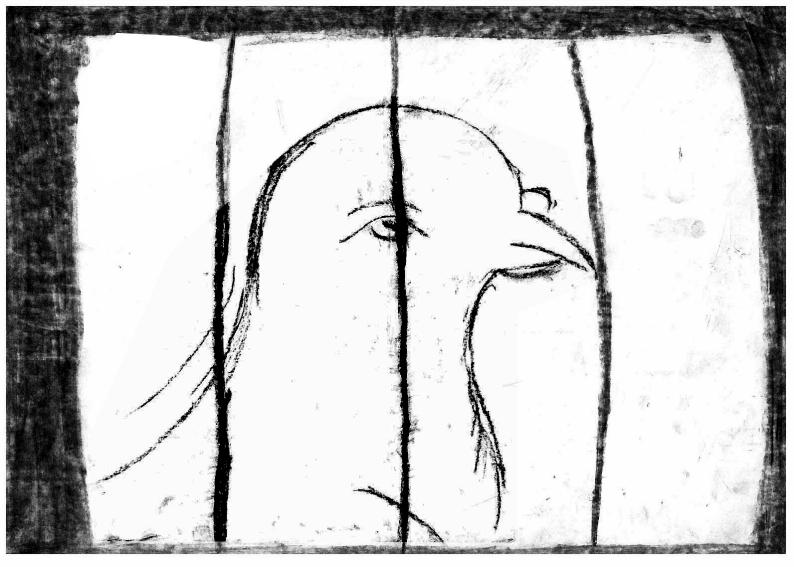


मेरे पंख के तले मेरे बच्चों की खुशनसीबी थी।

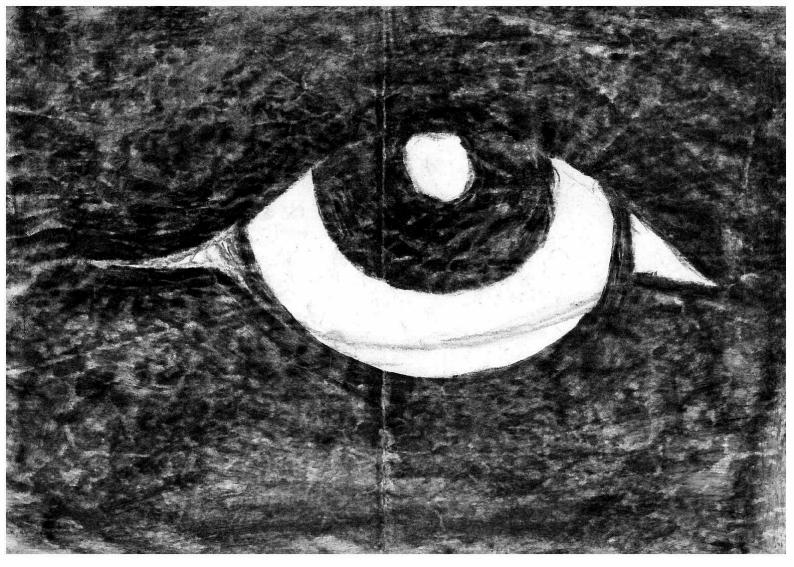
मासूम ज़िंदगियाँ मेरे साथ हंसती थी।

जमाने की भीड़ नहीं थी मेरे पास लेकिन अपनों का मुकम्मल साथ था।

मैं भी खुशनसीब परिंदा था, आजाद जिंदगी का शहंशाह था,



कबूतर मन ही मन सोच सोचकर दुखी हो रहा था।



जिसमें हमें हसीन जिंदगी जीने की शान चाहिए।

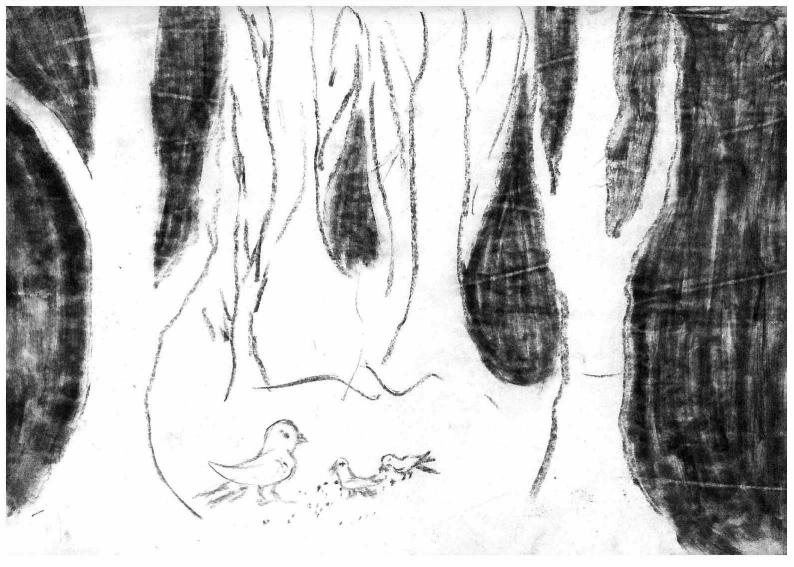
कबूतर अपने बच्चों के साथ बात कर रहा है

और उसके बच्चे अपने पिता से अपने ख्वाब कह रहे हैं।

देखो पापा जो उड़ रहे हैं वह खूबसूरत महलों में रह रहे हैं,

पापा हमें बड़ा मकान चाहिए

हम तो कोने में यह गुजर-बसर कर रहे हैं,



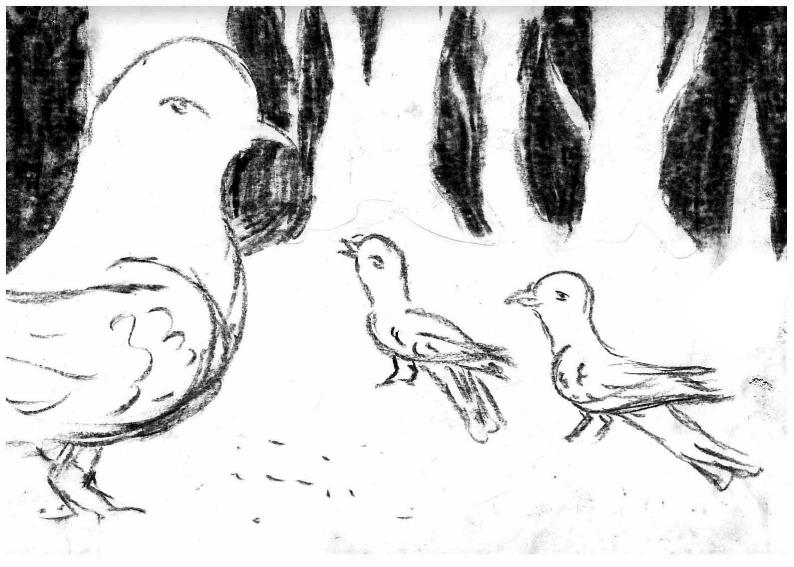
बच्चों मेरी गरीबी मेरे साथ मजाक कर रही है

मेरे पास छोटी सी कमाई है जो तुम्हारे ख्वाबों को खाक कर रही है।

मकान तो क्या तुम्हारे लिए तीन मंजिला महल खड़ा कर दूंगा।

दिन रात मेहनत करके मैं तुम्हारा ख्वाब पूरा करूंगा,

अभी मैं मजबूर हूं तुम्हारी ख्वाहिशों को पूरा नहीं कर सकता।



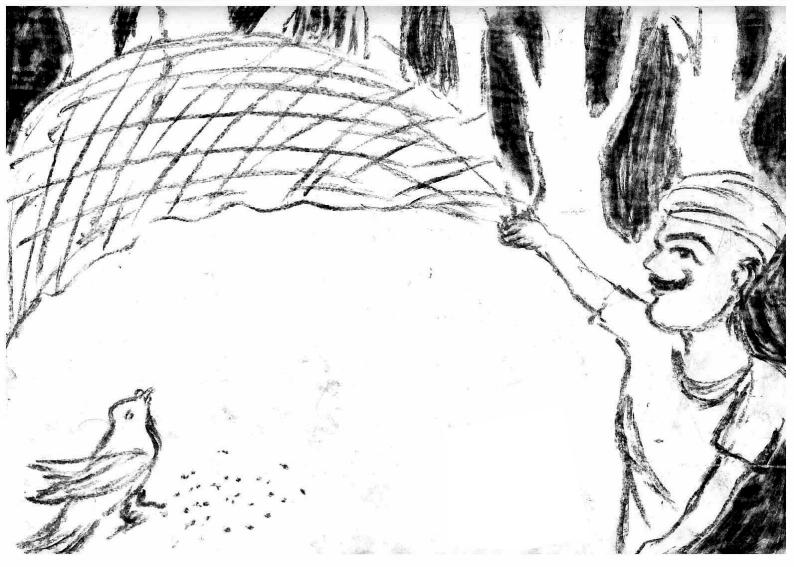
ले दौलत ले और अमीर हो जा, आजा आजा।

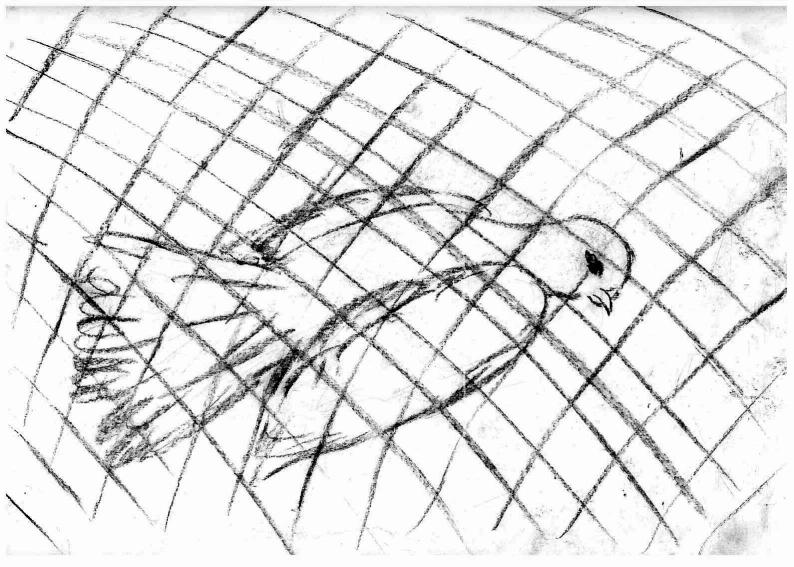
शिकारी कबूतर को दौलत का लालच देता है कबूतर से कहता है

दौलत और शानो-शौकत आज तेरे कदमों में होगी,

अगर तू मेरे साथ होगा तो तेरी हथेली दौलत से भरी होगी।







कबूतर पिंजरे में कैद है और अपनी अपनी सुंदर यादों से वर्तमान स्थिति में

आता है और पिंजरे में बंद साथियों से बात करता है।

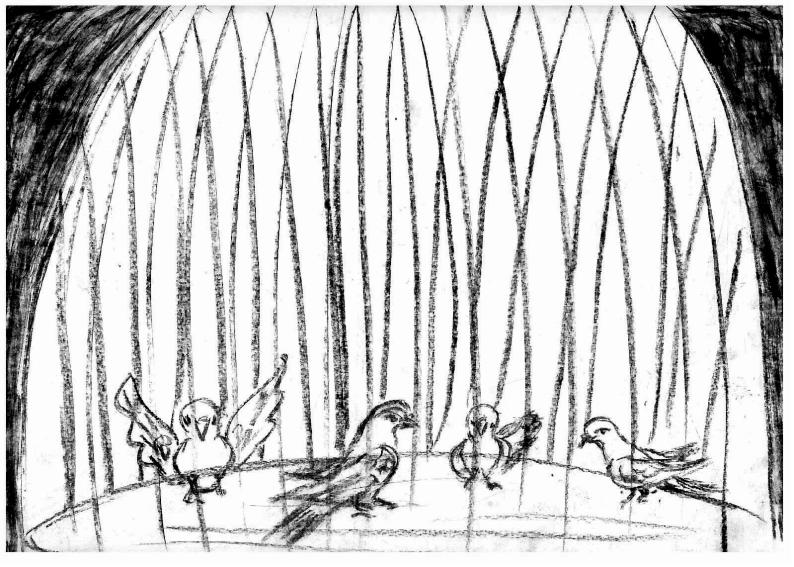
उनके ख्वाबों को पूरा करने के लिए मैंने दौलत के लालच का खंजर अपनाया।

नहीं जानता था कि दौलत का गुलाम बन कर मैंने खुद पर और अपने अपनों

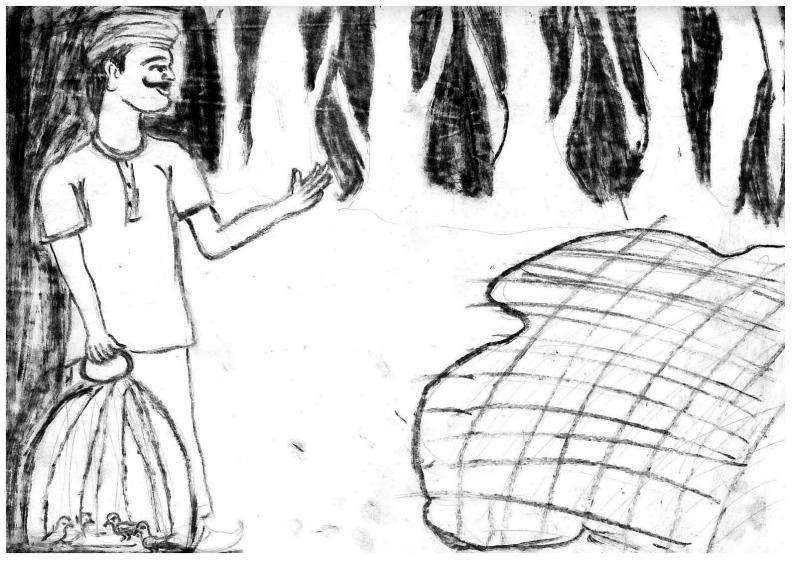
पर कहर बरसाया। आज मैं दौलत के नशे का गुलाम हूं,

अपनी आत्मा और अपने जिस्म के लिए कोहराम हूं।

मेरे मासूम बच्चों को मैंने अमीरी का मंजर दिखाया,



शिकारी कबूतर को पिंजरे में कैद करके जंगल से जा रहा है।



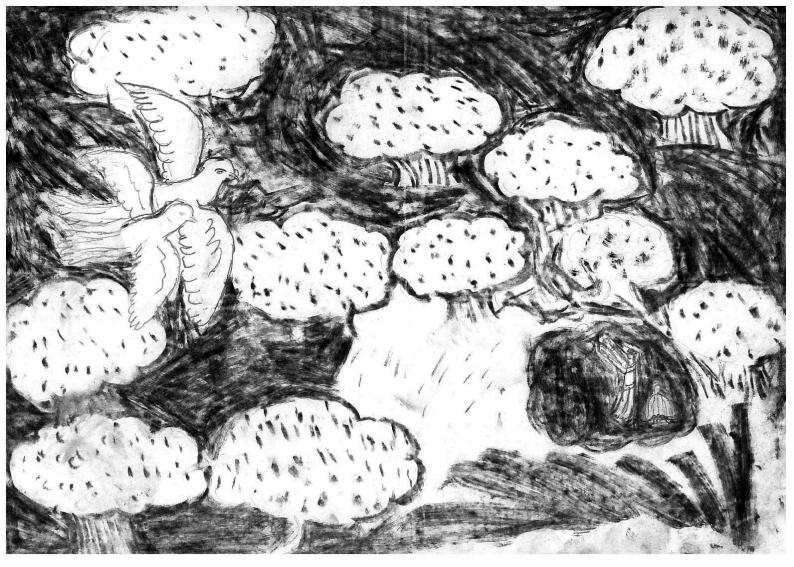
अचानक वह शेर पकड़ने के गड्ढे में गिर जाता है।



कबूतर के बच्चे उड़ते हुए अपने पापा को ढूंढ रहे हैं

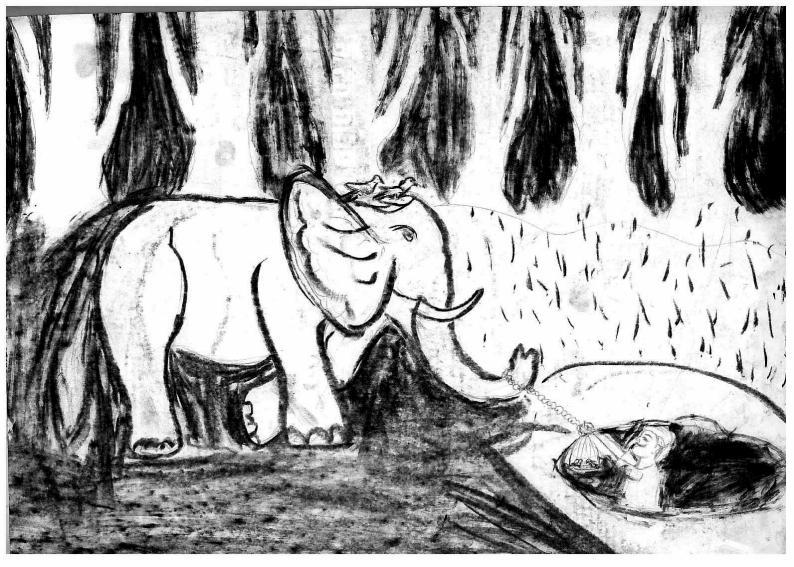
उनकी नजर अचानक गड्ढे में गिरे शिकारी पर पड़ती है

जो मदद के लिए चिल्ला रहा है।



उसका शोर सुनकर कबूतर के बच्चे भी जोर जोर से चिल्ला रहे हैं

और सारे जानवर शोर सुनकर गड्ढे के पास इकट्ठा होकर शिकारी को बाहर निकाल रहे हैं।



तब शिकारी बाहर निकल कर फूट-फूट कर रोता है

और अपनी गलती पर पछतावा करता है।

और कहता है "मैंने ना जाने कितनों को दौलत के नशे का लालच दिया,

न जाने कितने मासूम जिंदगियों को जाल में फंसा दिया।

सोचा नहीं कि मैं भी खुद अपने जुल्मों का शिकार हो सकता हूं,

लाखों को जख्मी किया है मैंने, मैं भी एक दिन ज़ख्मी हो सकता हूं।

आज मुझे एहसास हो गया कि दूसरों को दर्द दे तो एक दिन हम भी दर्द में डूब सकते हैं।

वक्त का चक्र खुद के पास आकर रुक भी सकता है

और अभिमन्यु की तरह हमें भी अपनी आगोश में ले सकता है।



इसी पश्चाताप के साथ शिकारी आसुओं से रोता हुआ और बच्चों को गले लगाकर

उनके पापा को पिंजरे से खोल कर आजाद कर देता है। कबूतर फिर से अपने

बच्चों के साथ ख़ुशी-ख़ुशी उड़ रहा है और कह रहा है

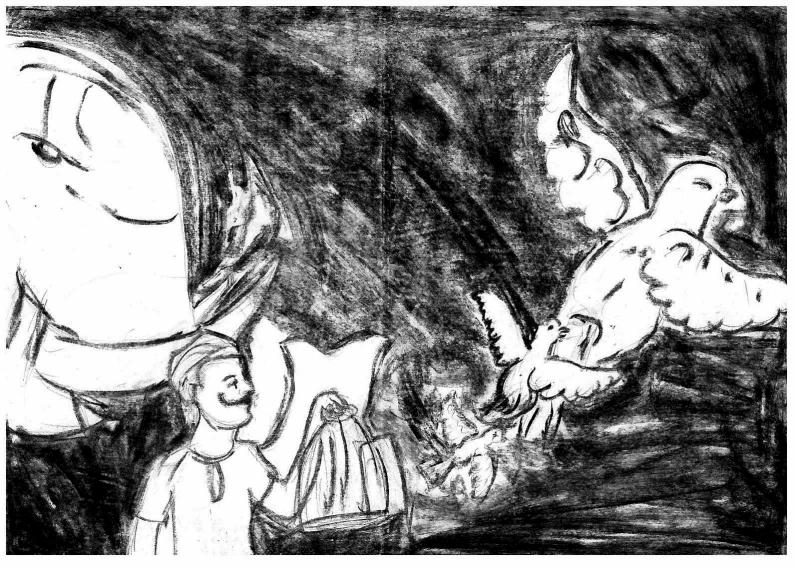
"हौसलों ने मेरी आज़ादी की तमन्ना को लाश नहीं होने दिया

और मुझे हताश नहीं होने दिया,

आज यकीन दिलाता हूं, लाख दुनिया कहे कि तू दौलत में डूब जा!

लेकिन मैं यह वादा करता हूं की

मेरे रास्ते में आने वाले हर लालच को तोड़ता चला जाता हूं, तोड़ता चला जाता हूं।"



सीख

लालच एक पाप है,

अगर पड़ गए उसमें तो उसके पिंजरे में केवल आप हैं,

•

स्वतंत्र रहना हमारी ख्वाहिश है

और गुलामी एक अभिशाप है।